QP – 086

19

III Semester B.C.A./B.Sc.(FAD/IDD) Examination, April/May 2021
(CBCS) (Repeaters) (2016-17 and Onwards)
LANGUAGE HINDI – III
Natak, Arthgrhan, Sankshepan

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्यांश में लिखिए : **(1×10=10)**

1) 'युगे युगे क्रान्ति' नाटक के रचनाकार कौन हैं ?
2) किसने क्रान्तिकारी कदम उठाया था ?
3) प्राचीनकाल में रण भूमि में पति के साथ कौन जाती थी ?
4) पुलिस किसको बंदी बनाकर ले गये ?
5) अनिरुद किससे शादी करना चाहता हैं ?
6) देवीप्रसाद के अनुसार व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार क्या हैं ?
7) धमकियों से विचलित नहीं होता हैं ?
8) सुगनचन्द्र की बेटी कौन थी ?
9) कौन विधवा से विवाह करने की प्रतिज्ञा लेता हैं ?
10) स्त्री के लिए विवाह का बन्धन क्या हैं ?

St Claret College LIBRARY Bangalore-560073

II. किन्हीं **दो** अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : **(2×7=14)**

1) स्त्री सदा स्त्री है । पीडियाँ उसके स्वभाव में परिवर्तन नहीं कर सकती । हमारे पुरखे मूर्ख नहीं थे लाखों वर्ष के अनुभव के बाद उन्होंने विवाह संस्कार को स्वीकार किया ।
2) ..... अरे लो, यह तुम्हारा चक्र फिर तेजी से घूमने लगा ।
3) "मैं उसे अब घर में नहीं आने दूँगा । वह कहीं भी जाए, कुछ भी करें" ।

III. "युगे-युगे क्रान्ति" नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । **(1×16=16)**

अथवा

'युगे-युगे क्रान्ति' नाटक के नारी पात्र-रामकली एवं शारदा का चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

P.T.O.

IV. किसी दो पर टिप्पणी लिखिए : (2×5=10)

1) सूत्रधार

2) कलावती

3) जैनेट ।

V. निम्नलिखित गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए संक्षिप्तिकरण कीजिए । 10

हमारे देश में जो हाल-हाल तक गुलाम बना रहा, नागरीक स्वतंत्रता का मूल्य समझना ज़रा कठिन हैं । अभी हमारे देश की जनता का ध्यान रोटी, कपड़ा, मकान और रोज़गार की ओर गया है । प्राय: लोग यह कहते सुनायी देते हैं कि हमें इससे मतलब नहीं कि इस देश में किसका शासन है । जनतंत्र है या तानाशाही । हमें तो रोटी चाहिए, रोजगार चाहिए, दवा जाहिए । इन आवश्यकताओं को कोई भी पूरा कर दे । जनता की यह मानसिक स्थिति ठीक नहीं । यदि जनता की सूझ-बूझ ऐसा ही रही तो फिर स्वतंत्रता जो असीम बलिदान देकर प्राप्त की गयी है । मिट जायेगी ।

VI. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए । (1×10=10)

मृत्युंजय और संघमित्र की मित्रता पाटलिपुत्र के जन-जन की जानी बात थी । मृत्युंजय जन-जन द्वारा 'धन्वन्तरि' की उपाधि से विभूषित वैद्य थे और संघमित्र समस्त उपाधियों से विमुक्त 'भिक्षु' । मृत्युंजय चरक और सुश्रृत को समर्पित थे तो संघमित्र बुद्ध के संघ और धर्म को । प्रथम का जीवन की सम्पन्नता और दीर्घायुष्य में विश्वास था तो द्वितिय का जीवन के निराकरण और निर्वाण में । दोनों ही दो विपरीत तटों के समान थे, फिर भी उनके मध्य बहने वाली स्नेह-सरिता उन्हें अभिन्न बनाए रखती थी । यह आश्चर्य है, जीवन के उपासक वैद्यराज को उस निर्वाण के लोभी के बिना चैन ही नहीं था, पर यह परम आश्चर्य था कि समस्त रोगों को मलों की तरह त्यागने में विश्वास रखने वाला भिक्षु भी वैद्यराज के मोह में फँस अपने निर्वाण को कठिन से कठिनतर बना रहा था ।

वैद्यराज अपनी वार्ता में संघमित्र से कहते-निर्वाण (मोक्ष) का अर्थ है आत्मा की मृत्यू पर विजय । संघमित्र हँसकर कहते देह द्वारा मृत्यू पर विजय मोक्ष नहीं हैं । देह तो अपने आप में व्याधि है । तुम देह की व्याधियों को दूर करके कष्टों से छुटकारा नहीं दिलाते, बल्कि कष्टों के लिए अधिक सुयोग जुटाते हो । देह व्याधि से मुक्ति तो भगवान की शरण में हैं । वैद्यराज ने कहा-मैं तो देह को भगवान के समिप जीते जी बने रहने का मानता हूँ । पर दृष्टीयों का यह विरोध उनकी मित्रता के मार्ग में कभी बाधक नहीं हुआ । दोनों अपने कोमल हास और मोहक स्वर से अपने-अपने विचारों को प्रस्तुत करते रहते ।

प्रश्न :

1) मृत्युंजय कौन थे ?

2) मृत्युंजय की विचारधारा क्या थी ?

3) लक्ष्य-भिन्नता होते हुए भी दोनों की गहन निकटता का क्या कारण था ?

4) दोनों को दो विपरित तट क्यों कहा हैं ?

5) देह के विषय में संघमित्र ने किस बात पर बल दिया हैं ?

6) देह व्याधि के निराकरण के बारे में संघमित्र की अवधारणा के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

7) विचारों की भिन्नता/विपरितता के होते हुए भी दोनों के संबन्धों की मोहकता और मधुरता क्या संदेश देती हैं ?

8) गद्यांश का उपयुक्त सुझाइए ।

9) उपसर्ग और प्रत्यय कीजिए ।

समर्पित अथवा विभूषित

10) रचना की दृष्टी से वाक्य का प्रकार बताइए :

"प्रथम का जीवन की सम्पन्नता और दीर्घायुष्य था तो द्वितीय का जीवन के निराकरण और निर्वाण में" ।